537/25

काशिकावृत्ति षष्ठाध्याय पदकृत्यों का विवेचनात्मक अध्ययन

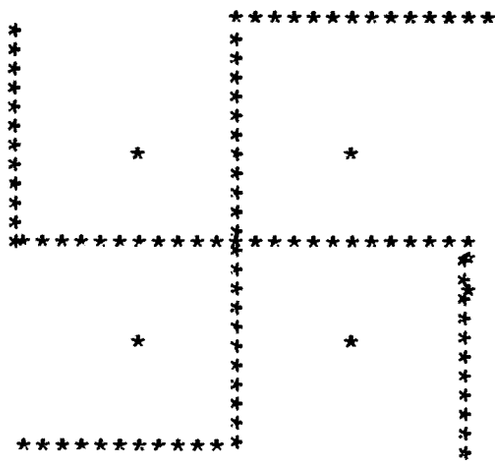

प्राक्कथन

000 00000000
000000

******* प्राक्कथन ***********

प्रस्तुत शोध - प्रबन्ध 'काशिकावृत्ति षष्ठाध्यायस्थ पदकृत्यों का विवेचनात्मक अध्ययन ' में शब्दशास्त्र में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपकरण ' पदकृत्य ' के योगदान का मूल्याड्.्कन किया गया है ।

पाणिनि ने सूत्रों के निर्माण में इस प्रकार की वैज्ञानिक पद्धति अपनायी कि अपेक्षित कुछ छूटा नहीं और अनपेक्षित कुछ आया नहीं । बाद के वैयाकरण जिनमें काशिकाकार प्रमुख हैं, ने पाणिनि के अष्टकसूत्रों को बार - बार कसौटी पर कसकर देखा । जहां भी कोई शड्.्का हो सकती थी, शड्.्का की, कि अमुक सूत्र की आवश्यकता क्या है? अथवा अमुक सूत्र में अमुक पद का क्या महत्व है?

पाणिनि के सूत्रों को हृदयड्.्गम कराने के लिए बाद के वृत्तिकारों अथवा भाष्यकारों ने जो शैली अपनायी उनमें पदकृत्य प्रदर्शन की शैली अत्यन्त महत्वपूर्ण है । महत्व की दृष्टि से उल्लेखनीय होते हुए भी प्रकृत विषय पर शोधकार्य का अद्यावधि अभाव ही रहा है । व्याकरण में पदकृत्य के महत्त्व और इसकी अनिवार्यता को दृष्टि में रखते हुए किया गया प्रस्तुत कार्य उपनी तरह का एकमात्र शोध - अध्ययन है । यद्यपि विद्वानों ने समय - समय पर काशिकावृत्ति एवं महाभाष्य पर विद्वत्तापूर्ण कार्य किये हैं, परन्तु एकमात्रपदकृत्य के विषय में किया गया कोई भी शोधकार्य मेरी दृष्टि में नहीं आया । केवल काशिकावृत्ति को आधार बनाकर लिखी गयी दो पुस्तकें

उल्लेखनीय हैं, प्रथम, ' काशिका का समालोचनात्मक अध्ययन ' नामक शोधप्रबन्ध डॉ0 रघुवीर वेदालंकार द्वारा लिखा गया है । इस शोध - प्रबन्ध में काशिकाकार का परिचय,अनुवृत्ति, संज्ञा, परिभाषा, उदाहरण तथ इष्टियों के साथ - साथ अनेक विषयों पर प्रकाश ड़ाला गया है, किन्तु पदकृत्य के विषय में किञ्चत् भी उल्लेख नहीं है । द्वितीय शोध - प्रबन्ध न्यास पर्यालोचन है, जो डा0 भीमसेन द्वारा लिखित है । इसमें न्यासकार के साथ - साथ पदमञ्जरीकार का परिचय, विभिन्न सूत्रों द्वारा उनके मत तथ साम्यवैषम्य दिखाया गया है, परन्तु पदकृत्यों के विषय में यह शोध - प्रबन्ध भी मौन है ।

पदकृत्य के महत्व को समझते हुए सौभाग्य से मेरे निर्देशक प्रातःस्मरणीय गुरूदेव ' डॉ0 यज्ञवीर दहिया ' ने मुझे इसी दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित किया, तथा मुझे अपनी इच्छानुकूल विषय पर कार्य करने का स्वर्ण अवसर उपलब्ध हुआ । इसी अभिलाषा को रखते हुए मैने यथा शक्ति एवं यथामति इस कार्य को पूर्ण करने का प्रयास किया है । पदकृत्यों के विवेचनात्मक अध्ययन में मैने केवल विवादित पदकृत्यों में न्यास, पदमञ्जरी एवं महाभाष्यकार के मतों को उद्धृत किया है । विवादरहित एवं सर्वमान्य पदकृत्यों में अनावश्यक विस्तार के भय से न्यास, पदमञ्जरी एवं महाभाष्य का सर्वत्र उल्लेख नहीं किया है ।

इस शोधकार्य के लिए सर्वप्रथम मैं परब्रह्म के प्रति नतमस्तक होते हुए अपने परमश्रद्धेय, प्रबुद्ध एवं शिक्षाविद् गुरू ' प्रो0 डा0 यज्ञवीर दहिया ' के प्रति विनीत भाव से कृतज्ञता अभिव्यक्त करता हूँ, जिन्होंने अतीव व्यस्तता में भी अपना बहुमूल्य समय एवं पुत्रवत् स्नेह देकर मुझे कृतार्थ किया है, वह मेरे लिए अविस्मरणीय है । इस विषय में मेरी जो बुद्धि विकसित हुई है, उसके लिए उनका प्रोत्साहन, अन्तः प्रेरणा, सुक्ष्मनिरीक्षण एवं स्निग्ध वात्सल्य मेरे लिए पान्थदीप रहे हैं । धन्यवाद जैसा कोई शब्द उनके प्रति श्रद्धा और आभार व्यक्त करने में तुच्छ प्रतीत होता है, साथ ही परमादरणीया श्रीमति (दहिया) देवी जी का ममत्व एवं स्नेह मेरे लिए प्रबल प्रेरणास्त्रोत रहा है ।

विश्वविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष एवं पुस्तकालय के अन्य कर्मचारियों का भी मैं धन्यवाद करता हूँ, जिनके द्वारा पुस्तकें प्राप्त करके मैं अपने कार्य को पूर्ण करने में समर्थ रहा ।

इसके अतिरिक्त इस शोधग्रन्थ को पूर्ण करने में मैनें जिन स्त्रोतों से सहायता प्राप्त की है, उन विद्वान् लेखकों का भी मैं हार्दिक धन्यवाद करता हूँ ।

परमपूजनीय माता - पिता का सहयोग तो मेरा अधिकार रहा है, परन्तु फिर भी मैं उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन में स्वयं को असमर्थ पा रहा हूँ, जिनकी अन्तः अभिलाषा एवं प्रेरणा से ही संघर्षों का सामना करते हुए मैं इस शोध - प्रबन्ध को पूर्ण करने में सफल हुआ हूँ ।

मैं अपनी धर्मपत्नी श्रीमति सुमित्रा देवी को भी धन्यवाद एवं शुभाशीष देता हूँ, जिन्होंने प्रस्तुत शोध - प्रबन्ध की विषय - सूची तैयार करने, पृष्ठाङ्कन करने तथा सहायकग्रन्थसूची को अकारादिक्रम से सुव्यवस्थित करने में मुझे सहयोग दिया । इसके अतिरिक्त इन्होंने पारिवारिक परिस्थितियों को भी कार्यानुकूल बनाने का प्रयास करके एक सुखद परिवेश की संरचना की । अपनी प्रिय पुत्री श्वेता को भी मैं स्नेहविह्वल होकर शुभाशीष देता हूँ, जिसने अबोधप्राय होते हुए भी शोधकार्यार्थ सामग्री को किसी प्रकार की क्षति न पहुंचाकर मुझे अनवरत रहने में सहयोग दिया ।

मैं अपने उन सभी मित्रों, सहयोगियों (जिनमें डॉ0 सत्यवीर सिंह, डॉ0 सुरेन्द्र कुमार रोहिला, डॉ0 राजकुमार, श्री जयप्रकाश) का भी हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने प्रकृत शोध - प्रबन्ध के निमित्त प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से पूर्ण सहयोग दिया ।

अन्त में मैं श्री रामेश्वर सैनी (आयकर विभाग) तथा श्री सुभाष सैनी (निजी सहायक प्रबन्धक, जिला दूरसंचार) , रोहतक का भी हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होने विद्युत की उपलब्धि न होने पर भी केवलमात्र किञ्चित समय में ही इस शोध - प्रबन्ध के टंकणकार्य को पूर्ण किया है । अत्यधिक विद्वान् न होने के कारण इस शोध - प्रबन्ध में मेरी जो त्रुटियां हैं, उनके लिए मैं विद्वज्जनों से क्षमा प्रार्थी हूँ ।

विद्वद्विधेयः Tejvir Singh

(तेजवीर सिंह)

---

1. न हि दोषा सन्तीति परिभाषा न कर्त्तव्याः ..... ।
   न हि भिक्षुकाः सन्तीति स्थाल्योनाधिश्रियन्ते ।
   न च मृगाः सन्तीति यवा नोप्यन्ते । म0 भा0 1/1/6

उपर्युक्त पंक्तियों के परिप्रेक्ष्य में प्रकृत शोध - प्रबन्ध में शाब्दिकों द्वारा ग्राह्य अत्यन्त महत्वपूर्ण विधा पदकृत्य को स्पष्ट एवं विश्लेषित करने का दुस्साहस किया गया है ।